Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-IV APRIL 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

# गोरधर्म गोरधाटी और बंजारा समाज एक अभ्यास

**प्रा.डॉ. दत्ता यु. जाधव**
इतिहास विभाग प्रमुख
श्री रेणुकादेवी महाविद्यालय, माहुर, जी. नांदेड.

विश्व की संस्कुती में गोर बंजारा संस्कुती का अपना एक विशेष स्थान है। बंजारा जनजाती का प्रचीन इतिहास सिंधु घाटी सभ्यातासे जुडा हुआ है। जिसके प्राचीन अवशेष संकेत तथा लोक जीवन आजही तीन हजार साल के पश्च्यात भी बंजारा वस्ती में जीवीत है। पहिले गोर समाज अफगाणीस्थान की गोर नामक घाटीमें अपनी वसाहत कीय हुये थे। यही गोर संस्कृती पहनपी थी। यहां ही गोरधाटी की स्थापना हुयी थी। आर्य के आक्रमण से गोर समाज सिंधु घाटी की ओर बडा ओर वही वसाहत बनाकर रहने लगे थे। इस समाज का इतिहास लिखीत या भौतिक साधनो से जादा मौखिक लोकगितो द्वारा जतन कीया गया है।

**सिंधु नदीरे पालेम सप्त सिंधुरे राळेम।**
**आरिया दामडीया दाम लगायोरे मारे सेना नायका।**
**आपने मोहन नगरीन (मोहनजोदाडो) बाळताणी।**
**कोलीया करनाके मारे सेना नायका।**
**हाडपा रे आसरेन कना जांवारे सेना नायका।**

इस गीत के आधपर कहा जाता है, की गोर बंजारा समाज सिधुघाटी में वस्ती बनाकर रहनेवाले गोरमाटीहै।

गोरवंशी समुह यही गोर बंजारा समाज नामसे समाज व्यवस्था में परीचित हैं. गोरधाटी याने परंपरा, रुढी, चालीरीती, इसीको ही गोरधर्म कहा जाता है। गोरधर्म को माननेवाले गोरमाटी एक स्वतंत्र गोरवंशी समुह है। गोरमाटी केवल गोर बंजारा समाज के पुरुष या महिला को नही कहा जाता, बल्की पुरे गोर बंजारा समुह के लोगो को कहा जाता है। गोर बंजारा समाज अपने आपको गोरमाटी नामसे पहेचानते हैं। भारत में सातवी शताब्दी से अरबी और तुर्की का आक्रमण सुरु हुआ था। इन्ही जाती के साथ व्यापार करनेवाले गोरवंशी समाज को बंजारा कहा जाने लगा. अरबी में बनज शब्द बना था। बनज याने ब्यापार और बनज करनेवाला बनजारा बन गया। भारत में व्यवसाय के आधार पर ही जाती को नाम दिया जाता है। भारतीय व्यापार का इतिहास जब हम देखते,तो बनजारा शब्द ग्यारवी शताब्दी में दिखाई देता है।

मध्ययुगीन काल में गोर समाज के पास बहुत जादा प्रमाणे में गाय बैल थे। गोर बंजारा बैलो के पीठपर सामान लादकर लाने और लेजाने का काम करने लगे थे। इसलिए व्यापार करनेवाले बंजारा समाज बन गया। लेकीन आज भी बंजारा समाज देश के किसी प्रदेश में गोरमाटी अलग पहचान बनाय रखे है। गोर बंजारा की कुछ विशेषताऐ ऐसी है की, उन्ही समाज मे पहनपती है। गोर वंशी बंजारा समाज के जो मुल जीवन पहचान के पाच प्रकार है। १.वस्ती (तांडा) २.गोरधाटी (गोरधर्म) ३.भाषा ( बाणी) ४. वेशभुषा (बाणो) ५. लोक कला (लोकगित)। गोरवंशी, गोरधाटी, गोरधर्म की अलग पहचान कराती हैं।

**१.गोरगड या वस्ती (तांडा)**

गोर बंजारा समाज जिस गाव में रहता है, उसे तांडा कहा जाता है। ये महाराष्ट्र शासन के महसुल व्यवस्था के प्रशासन के लिए बनायी गई व्यवस्था है। प्राचीन राजव्यवस्था गोर बंजारा की तांडा व्यवस्था जैसी थी । प्राचीन काल मे तांडा याने जन, या विश के नामसे जाने जाते थे। जन के प्रमुख को तांडे के प्रमुख के समान नायक कहा जाता था। मध्ययुगीन काल में गोरवंशी समाज की वसाहत को **'गड'** कहा जाता था। यह गड की परंपरा सेवालाल महाराज के समय तक थी। सेवालाल महाराज के दादाजी रामजी राठोड नायक जिस वस्ती में रहते थे, उसे गडमंगळुर कहा जाता था। सेवालाल महाराज की मॉ धरमणी के पिताजी जयराम जाधव जिस वस्ती में रहते थे, उसे जिन्तुरगड कहा जाता था। सेवालाल महाराजने जहा वस्ती बनाई थीं। उसे रुईगड कहा जाता है। महाराज की जहा समाधी बनाई गई थी। उस वस्ती को पोहरागड कहा जाता है। गड याने किल्ला में रहनेवाला समाज राजवंशी होता है। इसलिए गोरवंशी गोर बंजारा समाज राजवंशी था। जहा राजसत्ता होती है, वहा धर्मसत्ता ही होती है। यह धर्मसत्ता **'गोरधर्म'** के नामसे गोरवंश गोर बंजारा समाज में चली आ रही हैं। भारत की स्वाधीनता के बाद गोर बंजारा समाज को विमुक्त बना दिया और वस्ती को तांडा बना दिया गया। लेकीन आज भी गोर बंजारा समाज परंमपरागत राजव्यवस्था को तांडे में

बनाय रखे है। तांडे को नियंत्रण रखने के लिए एक अनूशासन व्यवस्था निर्माण की है। जिसे तांडा व्यवस्था कहा जाता हैं। तांडे में विभिन्न गोरवंश के गोत्र रहते हैं। गोर बंजारा समाज आपने आप को गोर, और दूसरे जाती के समाज को कोर कहता हैं। तांडे की समाजिक और धार्मिक नितीयों का प्रमूख नायक होता है। इन सारी स्थितीयों पर देखभाल करनेवाला, कारोबार पर ध्यान देनेवाला व्यक्ती को कारभारी कहा जाता हैं। नायक और कारभारी के साथ हसाबी, नसाबी, डायसानो नामक व्यक्ती भी तांडे में रहते हैं। १. नायक (राठोड) २. जाधव (कारभारी) ३. चव्हाण (डायसानो) ४. पवार (हसाबी) ५. आडे (नसाबी) इन पाच व्यक्ती को पंचगण कहते हैं। जहा गोर बंजारा समाज की पंचायत भरती है, उस आम सभा को **'मळाव'** कहा जाता हैं। यह सभा समाज के अंतर छोटे मोठे झगडे होते हैं उसका न्याय निवाडा करती हैं। उसे नसाब कहा जाता हैं।

**२. गोरधर्म (गोरधाटी)**

गोरवंशी बंजारा कहतें हैं, **'आपन धाटी मत छोडो गोरमाटी'** यह धाटी गोर बंजारा समाज का सांस्कृतिक, धार्मिक ओर सामाजिक आवश्कताओं को पुरा करती हैं। इसी के कारन गोर बंजारा की अलग पहचान हैं। इसवी सन पुर्व बारावी शदी में दो महान ऋषी होकर गये थे, जिसके नाम गोर अंगिरस और गोरवती थे। इन्हीके नेतृत्व में गोरवंशी समाज की सभ्यता निर्माण हुइ थी। गोरधर्म की स्थापना इन्होने ही की थी। सिधू घाटी के वंशजो में गोरवंशी याने गोरधर्म की कौम थी। यही कौम आज गोर बंजारा नाम से जानी जाती है। राहुल सांस्कृत्यायन कहते है की, मानव वंश तथा भाषा के आधार पर गोरवंशीय बंजारा प्राग आर्य है।

गोर बेजारा संस्कृति आपने आपमें परीपुर्ण हैं। आपनी पहचान के लिए गोर बंजारा व्यक्ती को पाच पिढीयों के दादा,दादी के नाम गोत्र बताना बताना पडता हैं। गोर बंजारा सामाजिक या धार्मिक कार्यो के अवसर पर पाच मुख्य जाती १.राठोड २. जाधव ३. पवार ४. चव्हाण ५. आडे के मान पान के लिए पांच लोटे पानी से भर कर रखे जाते हैं। पांच जातीयों में से उपस्थित किसी मुख्या व्यक्ती के सामने धर दिये जाते हैं। जिससे वह आचमन कर लेते हैं। गोरधर्म के अनुसार तांडे में जन्म से लेकर मृत्यु तक संस्कार किये जाते हैं। तळवाधोकेरो, धुंड, वदाई, साडी, पाल, कोथळो, नातरो, वाया इत्यादी संस्कार किये जाते हैं।

तांडे में जन्म संस्कार किया जाता हैं। **'तळवाधोकेर'** यह संस्कार लडका के जन्म के पाच दिन बाद किया जाता हैं। इस संस्कार में जलपुजा, वायूपुजा और अग्निपुजा होती हैं। **'वई माता सुई दोरा लेन पर जायेस, अन ढेरो कातती कातती वर आयेस'।** होली के दिन धुंड नामका एक संस्कार होता हैं। इस संस्कार में लडका का नामकरण किया जाता हैं। इस समय लडके को भविष्य मे निभानेवाली जिम्मेदारी का अहसास दिलाते हैं। इस समय एक गित गाया जाता हैं। ससुराल जाके लाडी लाना, लाडी लाके पलंग बिछाना। पलंग परीया पान चबाना, गुणवंत हो तो गुण बतलाना। ससरो बुढो के पाव दबाना, सासु बुढी सिक दिलाना। उतरी फागण,लागे चेत, आयी होळी बाजे ढोळी। चरीक चरीया चम्पा डाळ, ज्युं ज्युं चम्पा लेरा ले, ज्यु,ज्य पुत फलेरो ले। पेलो पुत मॉ सांभळे, दी मो पुत बाप संभाळे, तीन मो पुत गवा चरावे, चार मो पुत घोडो डुकावे, पंचमो पुत तांडो संभाळे, छटो पुत होय सबुती (नसाबी), सातमो पुत होय सपुती, शिकच, शिकावच, शिके केरी घीया पोळी छोरा आवडा व्हियोरे.....। **वदाई....** गोर बंजारा समाज में शादी के पुर्व वदाई नामक एक संस्कार किया जाता है। उस वक्त गुरुमंत्र पढकर अग्निदान भुजापर सुई से डाग दिया जाता हैं। **'कोळी आवे कोळी जावे, कोळी मांई जग समावे, धोळो घोडो आसलो, पातळीया आसवार, मुंगे आवडा मोगरा, तल्ली आवडा बान, कडो कटोरो भागडो, मांईच पुजा मांईच पाती, झुमकडी तलवार, झुमकडी ढाल, गुरु बाबा सदा..सदा'**. यह संस्कार दुला लडका पर विवाह के दो दिन पुर्व किया जाता हैं।

गोर बंजारा समाज में विवाह के संस्कार होते हैं। सगाई से लेकर बिदाई तक एकसो बिस विधी संस्कार होते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न संस्कार किये जाते हैं। दाडो, बारवी, तेरवी इत्यादी.

त्योहार : गोर बंजारा समाज में सार्वजनिक रुप में मनाये जानेवाले मुख्य त्योहार समनक, अकाडी, जांमळावस, नागपंचमी, तीज, दिवाली, दसराव और होली होते हैं। बरसात के प्रारंभ में धरती पुजा के रुप में समनक ( ओरी) नामक बकरा बली देकर निसर्ग की पुजा कि जाती हैं। यह पुजा किसी मूर्ती के सामने की नही जाती, तांडे के सामने पुर्व दिशा की ओर बकरा की बली दि जाती हैं।

तीज त्योहार : यह त्योहार मुख्य रुप से लडकीयॉ का होता हैं। तांडे के जिस घर में लडकी होती हैं। उस लडकी के नाम से बास की टोकरी में मीटी डालकर श्रावण पोर्णिमा के दिन गहु का बीज बोया जाता हैं। तांडे की सभी लडकीयॉ एक साथ सुबह और श्याम पानी डालकर गहु के बिज को ग्याहरा दिन तक बडा करती हैं। नव्हे दिन लडकियॉ तांडे में दिन डुबने के बाद ढबोंळी गीत

गाकर, गहु के आटे की पोली मे गुल डालकर लडु बनाकर उसे तांडे में घर घर बांटा जाता हैं। दसवे दिन गणगोरा गणगोरी की पुजा कि जाती हैं। प्राचीन काल में गोरवंशीय गण के प्रमुख पुरुष को गोरा (राजा) कहा जाता था। और गोरवंशीय गण के प्रमुख महिला को गोरी (राणी) कहा जाता था। खेत में पिकाया हर अन्नाज पहिले गोरागोरी (राजाराणी) को भेट दिया जाता था। इसलिए तीज त्योहार में उनकी पुजा कि जाती हैं।

गोर संस्कृती का परीणाम दुनिया की प्राचीन संस्कृती पर हुआ है। गोरवंशीयो की अलग सलग स्वतंत्र संस्कृती हैं। इसी प्रकार जीवन जीने की अलग परंपरा है। गोर बंजारा लोक जीवन के संस्कार रूप मे आज ही स्वतंत्र व्यवस्था रख है। इसीको गोरधाटी कहते इसेही गोरधर्म कहा जाता हैं। गोरधाटी एक स्वतंत्र गोरवंशीक गोरधर्म हैं।

### ३. गोरबाणी (गोरभाषा)

देश की एक मात्र गोरबंजारा जमात है, जिसकी बोली भाषा और गोत्र एक जैसे ही हैं। गोरबंजारा आजही अपने विभिन्न प्रांत में बसे हुअे अपने जात भाइयोसे आपनी मात्रूभाषा यानी गोरबोली में वार्तालाब करता हैं। अलग अलग प्रांत के गोरवंशी आपने आपको गोरमाटी नामसे परीचय देते हैं। गोरबंजारा, गोरमाटी की अपनी अलग गोरबाणी होती हैं। गोरबंजारा का मुलस्थान,गोरस्थान, गोरबंद नदी तथा गोर पहाडीयॉ, सिंधु नदी की घाटी सभ्यता का भुभाग रहा हैं। गोरबंजारा जमात कही शताब्दियोसे विशिष्ट भूभाग में बसा हुआ था। जिसके कारण उनकी अपने कबिले के आंतरिक व्यवहार बोलचाल के लिए जिस बोली का निर्माण हुआ वही गोरबोली हैं। गोरबंजारा की गोरबोली की फीलाहल कोइ लिपी नही मिलती इसलिए प्रादेशिक भाषामें गोरबंजारा का गोरसाहित्य लिखा जा रहा है। गोरबंजारा का रीतीरीवाज ,सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्कार, सभ्यता और त्योहार समजने और पहचाणने के लिए उनकी गोरबोली एकमात्र कुंजी है। गोरबंजारो की गोरबोली गोरमाटी की अस्मिता बनती जा रही हैं।

### ४. गोरबाणो (गोरवेशभुषा)

गोरमाटी गोर बंजारा की महिलाओ की अपनी स्वतंत्र वेशभुषा और केशभुषा के कारण उनकी अपनी स्वतंत्र पहचान बनी हुअी है। गोरधाटी गोर बंजारा महिला की अलग करनेवाली वेशभूषा और केशभुषा की जडे सिंधुघाटी सभ्यता में दिखाइ देती है। गोरधाटी और गोरधर्म की अलग पहचान इसी सिंधुघाटी की सभ्यता में थी। सिंधूघाटी के उत्खन्न में जो वेशभुषा ,केशभुषा और अलंकार के अवशेष मिले है। उनमें लगबग नौवद प्रतिशत समानताऍ गोरमाटी गोर बंजारा की महिला के आभुषण और वेशभुषा में दिखाई देता है। तांडे में आजभी गोरमाटी गोर बंजारा की महिलाये घागरा, ओढणी, काचली, आटी, चोटला, घुगरी, टोपली, कोपरा, दंडीकडम, कडा, पायजम, लटकंण, कणदोडो, पाटल्या, कडा, फुच्या, फुली,ढुल, मरकी, छीड, मणका, आदी अलंकार की पेहराव होता है। इसी को गोरबाणो कहा जाता है। यह गोरमाटी गोर बंजारा की अलग पहचान दिखाता है। गोरबंजारो की गोरबाणी गोरमाटी की अस्मिता बनती जा रही हैं।

### ५. गोरसाहित्य (गोरकला)

गोरधाटी गोर बंजारा की स्वंतत्र विशेषताये उनकी अपनी गोरकलाये हैं। बंजारो की अपनी गोरकला पारंपरीक कला है, जो पीढी दर पीढी से चले आ रही है। गोरसाहित्य आजही गोरबंजारा के स्त्री,पुरूष के कंठो में सुरक्षित है। हजारो सालसे बंजारा गोरसाहित्य मौखिक रूपसे जतन किया गया है। यही मौखिक गोरसाहीत्य गोरवंशी, गोरधाटी, गोरधर्म की अलग पहचान कराती हैं। सण, त्योर के गीत, चक्की के गीत, संस्कार के गीत, नृत्यगीत,लोककथा,लोकगाथा, केणावट और साकी ये गोरसाहित्य हैं। सुंग का रूपांतर आज कलापथक के रूप में हो गया है। कलापथक, भजन, गोरबंजारो की गायक कला नृत्यकला, आजही जीवत है। नगारा, थाली, डफडा, झांज, खंजेरी और बासूरी बहुत सुंदर ढंगसे बनजारा बजा लेते है।

एक प्राचीन स्वयंपुर्ण समाज व्यवस्था है, जो तांडा, धाटी, वाणी, बाणो, और गोरसाहित्य या गोरकला इन पाच तत्व को अपने आस्था का स्थान मानते हैं। इसी वजहैसे गोरवंशी गोरबंजारो का गोरधर्म सबसे अलग और स्वतंत्र हैं।

**'पंच पंचायत राजा भोजरी सभा पचारे लाख न पंचारे सव्वा लाख,**
**सभा सोळे से आठरारी नायका,**
**सगा से आनंद, भाई से कसळ'** ....।

**हिन्दी संदर्भ ग्रंथ**

१. ओझा निंबध संग्रह :- गौरी शंकर ओझा
२. विर चित्तोड भुमि :- राज वल्लभ सोमानी
३. अल्लाह उदल परमाल रासो :- कवि जकनीक
४. बौध्द कालीन भारतीय भुगोल :- डॉ .भगतसिंग
५. बुंदेलखंड की संस्कृती और साहीत्य :- रामचरण मीश्र
६. हिन्दी विर काव्य :- टिकमसिंह तोमर
७. राज्यस्थान की जांतीया :- बंजरगलाल लोहीया
८. बंजारा संस्कृती :- प्रा.मोतीलाल राठोड

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com